व्याख्यान विधि

यह शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। यह आदर्शवादी विचारधारा की देन है। विद्यालयों में आज भी इस विधि का शिक्षण की दृष्टि से कम महत्व नहीं है। शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप इसका अर्थ अधिक व्यापक हो गया है। इसे शिक्षण की प्रभुत्व वादी शिक्षण आव्यूह भी मानते हैं; क्योंकि इसके द्वारा अधिगम के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। सामाजिक विषयों के शिक्षण में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है।

व्याख्यान विधि के सन्दर्भ में जेम्स एम० ली ने लिखा है- "व्याख्यान एक शिक्षण-शास्त्रीय विधि है, जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है"। इसी सन्दर्भ में रिस्क का विचार है कि "व्याख्यान, तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन है जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।"

एक विधि के रूप में यह विधि यह मानकर चलती है कि सीखने वाला भाषण तथा इंगित किये सम्बन्धों को समझने की योग्यता रखता है। जेम्स एम० ली का कथन है कि व्याख्यान विधि को निर्देश या कथन प्रविधि से नहीं मिलाना चाहिए। निर्देश द्वारा शिक्षक किसी मुख्य सूचना को प्रदान करता है जो छात्रों को अपने शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है। कथन अपने रूप में संक्षिप्त होता है जबकि व्याख्यान काफी बड़ा। व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य तथ्यों तथा धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रतिपादित करना है।

व्याख्यान विधि के गुण एवं दोष

गुण :-

① इसके द्वारा विषय-वस्तु को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र सरलता से समझ सके।

② यह कम से कम समय में विषय-वस्तु को पूरा करने में सहायक है। साथ ही यह बौद्धिक कुशलता को उत्पन्न करती है।

③ यह छात्रों को सुनने की कला में प्रशिक्षित करती है।

④ इसके द्वारा विषय-वस्तु में निहित सम्बन्धों पर छात्रों के ध्यान को आकृष्ट किया जाता है।

⑤ यह असंगत तथ्यों की अवहेलना करके छात्रों को संगत तथ्यों को ग्रहण कराने में सहायक है।

दोष :-

① यह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

② यह शिक्षक-केन्द्रित विधि है जबकि आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल दे रही है।

③ इसमें समय का अपव्यय होता है क्योंकि बालक निष्क्रिय श्रोता के रूप में बहुत कम ग्रहण कर पाता है शिक्षक की तैयारी भी व्यर्थ हो जाती है।

④ यह इस बात की कोई गारण्टी नहीं देता है कि छात्र व्याख्यान द्वारा दी गई विषय-वस्तु को समझ लेंगे।

⑤ छात्रों में लापरवाही उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

सुझाव :-

व्याख्यान विधि को छात्रोपयोगी बनाने के लिए निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है।

① व्याख्यान नियोजित होना आवश्यक है।

② यह किसी एक केन्द्रीय विचार या समस्या या प्रकरण पर आधारित होना चाहिए।

③- शिक्षक को रूप-रेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
④- यह हाव-भावयुक्त ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
⑤- इसमें मौखिक उदाहरणों तथा शाब्दिक चित्रों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाए।
⑥- यह मध्यम गति से प्रस्तुत किया जाए।

(योजना - विधि)

(PROJECT - METHOD)

योजना विधि शिक्षण की नवीन विधि मानी जाती है। इसका विकास शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुआ है। शिक्षा इस प्रकार की दी जानी चाहिये जो जीवन को समर्थ बना सके। इसके प्रवर्तक डब्यू० एच० किलपैट्रिक, जॉन डीवी के शिष्य थे। यह विधि अनुभव-केन्द्रित होती है। बालकों के समाजीकरण पर विशेष बल देती है। सामाजिक विषयों के शिक्षण में इसे भली प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है।

-किलपैट्रिक ने डीवी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्तों के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया गया। इसका निर्माण विद्यालय के परम्परागत एवं शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया। इसमें बालों की क्रियाशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

प्रोजेक्ट शब्द की परिभाषा:-

प्रोजेक्ट शब्द की परिभाषा विभिन्न प्रकार से की गई हैं।

किलपैट्रिक के अनुसार:- "प्रोजेक्ट वह महत्वपूर्ण अभिप्रायपूर्ण क्रिया है, जो पूर्ण संलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण में पूरी की जाए।"

प्राचार्य

प्रो० स्टीवेन्सन के अनुसार :- "प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है, जिसका समाधान उसके प्रकृत वातावरण में रहते हुए ही किया जाता है।"

प्रो० बैलार्ड के अनुसार :- "प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक ऐसा-सा अंश है जिसको विद्यालय में प्रतिपादित किया जाता है।"

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि योजना वह क्रिया है जो वास्तविक जीवन में रहकर ही पूर्ण की जाती है, अर्थात् वह अपने स्वाभाविक वातावरण में ही पूर्ण होती है।

इतिहास में इस पद्धति के प्रयोग के बारे में विभिन्न मत हैं। प्रो० बाइनिंग तथा बाइनिंग का मत है कि इतिहास में योजना पद्धति का व्यवहार कठिन है। परन्तु टी० डब्ल्यू० सौसम्स का कथन है कि इतिहास शिक्षण में योजना विधि का प्रयोग किया जा सकता है। ~~परन्तु फिर भी~~ उदाहरणार्थ:- स्थानीय स्मारकों का पर्यटन द्वारा अध्ययन, सामाजिक घटनाओं का शिक्षण आदि। परन्तु फिर भी इतिहास में इस पद्धति का प्रयोग अन्य सामाजिक विज्ञानों की भाँति बहुतायत से नहीं हो सकता है। इसके प्रयोग में निम्नलिखित स्तरों को पार करना पड़ता है।

1. परिस्थिति उत्पन्न करना।
2. योजना का चयन।
3. उद्देश्य-निरूपण।
4. योजना पूर्ण करने का कार्यक्रम।
5. कार्यक्रम को क्रियान्वित करना।
6. कार्य का निर्णय।
7. कार्य का लेखा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

22/09/2020